Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 13

No. of Printed Pages – 7

VU–21–Hindi Sah.

यहाँ से काटिए

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा, 2016

हिन्दी साहित्य

(Hindi Sahitya)

समय : 3¼ घण्टे

पूर्णांक : 80

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं ।

3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें ।

4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें ।

5) उत्तर यथासम्भव निर्धारित शब्द–सीमा में ही सुपाठ्य लिखें ।

यहाँ से काटिए

खण्ड – अ

1) निम्न पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
(उत्तर सीमा 20 से 40 शब्द)

विश्व की सम्पूर्ण पीड़ा,
सम्मिलित हो रो रही है,
शुष्क पृथ्वी आँसुओं से,
पाँव अपने धो रही है,
इस धरा पर जो बसी दुनिया
यही अनुरूप उसके –
इस व्यथा से हो न विचलित
नींद सुख की सो रही है,

क्यों धरणि अब तक न गलकर
लीन जलनिधि हो रही है?
देखते क्यों नेत्र कवि के,
भूमि पर जड़ तुल्य जीवन?
तीर पर कैसे रुकूं मैं,
आज लहरों में निमंत्रण।

क) पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। [1]

ख) 'क्यों धरणि अब तक न गलकर' पंक्ति में 'धरणि' शब्द का अर्थ लिखिए। [1]

ग) 'शुष्क पृथ्वी आँसुओं से पाँव अपने धो रही है।' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार को बताते हुए परिभाषा लिखिए। [2]

घ) इस धरा पर जो बसी हुई दुनिया है, वह क्या कर रही है? और क्यों? स्पष्ट कीजिए। [2]

ङ) कवि तीर पर क्यों नहीं रुकना चाहता? [2]

2) निम्न गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
(उत्तर सीमा 20 से 40 शब्द)

समाज में एक ओर जीवन की स्थिरता है और दूसरी ओर परिवर्तनशीलता। समाज जब तक दृढ़तापूर्वक किसी नियम का पालन नहीं करेगा, तब तक उसकी उन्नति नहीं होगी। इसलिए अधिकांश लोगों का विचार कर समाज की एक मर्यादा बना दी जाती है। समाज के सभी व्यक्तियों को उस मर्यादा का पालन करना पड़ता है। चाहे किसी व्यक्ति को कष्ट ही क्यों न हो, किंतु वह समाज की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करेगा। यदि वह ऐसा करेगा, तो समाज द्वारा निन्दनीय होगा। अधिक की भलाई का विचार कर हमें एक की भलाई की चिन्ता छोड़नी ही पड़ती है। परन्तु कुछ समय बाद अवस्था विशेष में परिवर्तन होने के कारण समाज में दोष उत्पन्न हो जाते हैं। तब उन दोषों को दूर करने के लिए समाज की मर्यादा भंग-करनी पड़ती है और एक नयी मर्यादा बनानी पड़ती है। जो लोग समाज को नये पथ का दर्शन कराते हैं, उन्हें कष्ट सहना पड़ता है। सभी तरह के कष्टों को सहकर वे समाज के कल्याण के लिए अपने कार्यों में दृढ़तापूर्वक लगे रहते हैं। अंत में सत्य-निष्ठा के कारण वे समाज के सुधारक कहे जाते हैं।

क) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। [1]

ख) समाज की उन्नति कब तक नहीं हो सकती है? [1]

ग) समाज द्वारा किस प्रकार के व्यक्ति की निन्दा की जाती है और क्यों? [2]

घ) अवस्था विशेष में परिवर्तन से उत्पन्न दोषों को कैसे दूर किया जाता है? [2]

ङ) किस प्रकार के लोगों को समाज सुधारक कहा जाता है? [2]

खण्ड – ब

3) किसी एक विषय पर लगभग 450 शब्दों में निबन्ध लिखिए: [8]

i) राष्ट्रीय एकता में युवा शक्ति का योगदान

ii) राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका

iii) बेरोजगारी : समस्या और समाधान

iv) भारतीयता पर अपसंस्कृति का दुष्प्रभाव

4) जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) श्यामगढ़ की ओर से जिले के समस्त प्रधानाचार्यों को कार्यालयी पत्र लिखिए, जिसमें बोर्ड–कक्षाओं में अध्ययनरत कमजोर विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित करने की बात हो। [4]

अथवा

अपने आपको वार्ड पार्षद कविनगर मानकर जिला पुलिस अधीक्षक, मीरापुर को पत्र लिखिए जिसमें आये दिन असामाजिक तत्वों द्वारा उत्पात मचाकर कानून व्यवस्था भंग करने तथा अशांति उत्पन्न करने का उल्लेख हो।

5) निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए:

क) जन संचार के माध्यम कौन–कौन से हैं? वर्णन कीजिए। [2]

ख) पत्रकारीय लेखन में समाचार कैसे लिखा जाता है? [2]

ग) नाटक को प्रभावी बनाने वाली कौन–कौन–सी बातें हैं? लिखिए। [2]

घ) नए और अप्रत्याशित लेखन में कैसी तैयारी होनी चाहिए? [2]

खण्ड – स

6) निम्न पद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: [7]

लघु सुरधनु से पंख पसारे–शीतल मलय समीर सहारे।

उड़ते खग जिस ओर मुँह किए--समझ नीड़ निज प्यारा।

बरसाती आँखों के बादल--बनते जहाँ भरे करुणा जल।

लहरें टकराती अनंत की–पाकर जहाँ किनारा।

हेम कुंभ ले उषा सवेरे–भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मदिर ऊँघते रहते जब–जगकर रजनी भर तारा।

अथवा

तोड़ो तोड़ो तोड़ो

ये पत्थर ये चट्टानें

ये झूठे बंधन टूटें

तो धरती को हम जानें

सुनते हैं मिट्टी में रस है जिससे उगती दूब है

अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है

आधे आधे गाने

तोड़ो तोड़ो तोड़ो

ये ऊसर बंजर तोड़ो

ये चरती परती तोड़ो

सब खेत बनाकर छोड़ो

मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को

हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को?

गोड़ो गोड़ो गोड़ो

7) निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए:

क) अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई। जिअत जीव जड़ सबइ सहाई।।

जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी। तजहिं विषम विषु तापस तीछी।।

उपर्युक्त पंक्तियों का काव्य–सौन्दर्य लिखिए। [2]

ख) कहि कहि आवन छबीले मन भावन को,

गहि गहि राखति ही दै दै सनमान को।

उपर्युक्त पंक्तियों का शिल्प सौन्दर्य लिखिए। [2]

8) निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए:

क) 'गीत गाने दो मुझे' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। [2]

ख) 'दिशा' कविता में बच्चे के स्थान पर आप होते और कोई आपसे पूछता कि 'हिमालय किधर है?' तो आप क्या उत्तर देते? अपने शब्दों में लिखिए। [2]

खण्ड – द

9) निम्न गद्याशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: [7]

बालक के मुख पर विलक्षण रंगो का परिवर्तन हो रहा था, हृदय में कृत्रिम और स्वाभाविक भावों की लड़ाई की झलक आँखों में दीख रही थी। कुछ खाँसकर, गला साफ कर नकली पर्दे के हट जाने पर स्वयं विस्मित होकर बालक ने धीरे से कहा, 'लड्डू'। पिता और अध्यापक निराश हो गए। इतने समय तक मेरा विश्वास घुट रहा था। अब मैंने सुख की साँस भरी। उन सबने बालक की प्रवृत्तियों का गला घोंटने में कुछ उठा नहीं रखा था। पर बालक बच गया। उसके बचने की आशा है क्योंकि वह 'लड्डू' की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, भरे काठ की अलमारी की सिर दुखाने वाली खड़खड़ाहट नहीं।

अथवा

ये लोग आधुनिक भारत के नए 'शरणार्थी' हैं, जिन्हें औद्योगीकरण के झंझावात ने अपनी घर जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया है। प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग–अपना घरबार छोड़कर कुछ अरसे के लिए ज़रुर बाहर चले जाते हैं, किंतु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने–पहचाने परिवेश में लौट भी आते हैं। किन्तु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता है, तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते। आधुनिक औद्योगिकरण की आँधी में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

10) निम्न में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए: [2 × 2 = 4]

(उत्तर–सीमा लगभग 50 शब्द)

क) ''महाराज! –– जब से शंकर भगवान हम लोगन क छोड़ के हियाँ चले आए, गाँव भर पानी न पिहिस। अउर तब तक न पी जब तक भगवान गाँव न चलि हैं। अब हम लोगन के प्रान आपै के हाथ में हैं।'' मुखिया की बात कहने की शैली कैसी थी तथा लेखक ब्रज मोहन व्यास की क्या प्रतिक्रिया रही? लिखिए।

ख) 'यास्सेर अराफात का व्यक्तित्व सहजता, सरलता तथा सेवाभाव से ओतप्रोत था।' गाँधी, 'नेहरू और यास्सेर अराफात' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

ग) 'प्रेम के लिए किसी भी निश्चित व्यक्ति, समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं है।' 'दूसरा देवदास' कहानी के आधार उपर्युक्त पंक्ति को स्पष्ट कीजिए।

11) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' या राम विलास शर्मा का साहित्यिक परिचय लगभग 100 शब्दों में लिखिए। [4]

खण्ड – य

12) निम्न प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर (प्रत्येक को) लगभग 50 शब्दों में लिखिए: [4 × 2 = 8]

क) 'सूरदास' प्रतिशोध का नहीं बल्कि पुनर्निर्माण का ही दूसरा नाम है। सूरदास की झोंपड़ी पाठ को दृष्टि में रखते हुए सूरदास की चारित्रिक विशेषताओं को लिखिए।

ख) 'आरोहण' कहानी लेखन में निहित कहानीकार का चिंतन क्या रहा है? स्पष्ट कीजिए।

ग) तो मुइला, इसी तरह मैं भी आ बैठा मौत की इस पीठ पर, उसी की जिसने मेरा सब कुछ निगल, लिया था ----। भूप सिंह के वक्तव्य के पीछे कही गयी गिद्ध और चिड़िया की कहानी कौनसी है? लिखिए।

घ) अपना मालवा (खाऊ उजाड़ू सभ्यता में) पाठ, लेखक की पर्यावरण सम्बन्धी चिंता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। पठित पाठ के आधार पर लिखिए।

ङ) 'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ की वर्तमान समय में प्रासंगिकता क्या है? अपने विचार लिखिए।

13) 'बिस्कोहर की माटी' आत्मकथांश में लेखक ने ग्रामीण प्राकृतिक सुषमा और सम्पदा का सुन्दर वर्णन किया है। पठित पाठ के आधार इसे अपने शब्दों में लिखिए। (उत्तर–सीमा लगभग 125 शब्द) [6]

DO NOT WRITE ANYTHING HERE